मॉड्यूल 2 वीडियो कक्षा 3: काई कूपिश्मिडेट के साथ साक्षात्कार

नमस्ते। 'महामारी में पत्राकारिताः कोविड-19 को वर्तमान और भविष्य में कवर करना' पाठ्यक्रम के वीडियो सेगमेंट के इस नवीनतम सेट में आपका एक बार फिर से स्वागत है। इस सेगमेंट में हमारे साथ काई कूपिश्मिडेट हैं, जो बर्लिन स्थित जर्नल साइंस के संवाददाता है। इस कोर्स में आने के लिए धन्यवाद, काई।

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है मेरीन।

मैं वास्तव में यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि इस महामारी के बारे में आपने सबसे पहला क्या कहानी लिखी है? क्या ऐसी कोई बात है जब आपने यह महसूस किया हो कि यह इस बारे में आपकी एकमात्रा कहानी होगी?

वास्तव में इसके बारे में बताना हमेशा कठिन होता है, लेकिन मैंने 9 जनवरी को विज्ञान पत्रिका में दो सहयोगियों के साथ मिलकर इस बारे में पहला लेख लिखा था, और यह वही दिन था जब चीन ने मूल रूप से यह घोषणा की थी कि यह एक नोवल कोरोनावाइरस था। इसके बाद कोई लेख नहीं निकला। यह बस प्रकाशित ही होने वाला है।

उस समय हमने इस बारे में चर्चा की थी कि क्या यह इंसान से इंसान में फैल सकता है? उस समय यह कहा गया था कि इंसान से इंसान में फैलने का कोई सबूत नहीं था।

लेकिन मैंने जिन वैज्ञानिकों से पहले बात की थी, वे काफी उलझन में थे। मुझे लगता है कि इसमें थोड़ा समय लगा। मैं वास्तव में छुट्टी पर था। यह दूसरी बात है। मैं उस समय ब्राजील में था। मुझे याद है मैंने सोचा था कि यह किसी भी तरफ जा सकता है। मुझे उम्मीद थी कि यह चुपचाप चला जाएगा। लेकिन बेशक यह नहीं गया।

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मुझे लगता है कि मेरे अनुसार बड़ा बदलाव जनवरी के अंत में हुआ और फिर फरवरी में धीरे-धीरे बहुत सारे साक्ष्य सामने आए कि वास्तव में यह इंसान से इंसान में फैल रहा है। चीन के बाहर पहले ऐसे मामले हुए।

मुझे याद है कि उस समय मैंने ट्विटर पर इस बारे में कुछ लिखा था। लेकिन 21 या 22 फरवरी के मध्य में ईरान ने यह घोषणा की थी कि उनके यहां कई मौतें हुई हैं। मुझे लगता है कि कई चीजें एक साथ हुईं। तब मुझे वास्तव में एहसास हुआ कि मैं जिन लोगों से बात कर रहा था, वे अपनी धारणा बदल रहे थे। वैज्ञानिक स्पष्ट रूप से अपनी धारणा बदल रहे थे, और कह रहे थे कि यह एक महामारी है। मैंने एक लेख पहले भी लिखा था, जिसमें हम देख रहे थे कि क्या चीन इस वायरस को नियंत्रित कर सकेगा या क्या यह महामारी बनने वाला है? इस मसले पर, फरवरी की शुरुआत में, या शायद जनवरी के अंत में, यह स्पष्ट था कि अधिकांश वैज्ञानिकों को पहले से ही संदेह था कि इसे नियंत्रित किया जा सकेगा।

आप शुरू से ही इससे जुड़े रहे हैं। मुझे लगता है कि चीन के बाहर दुनिया को सबसे पहली चेतावनी बहुत देर से मिली जो नए साल की पूर्व संध्या से पहले थी, जब चीन के स्वास्थ्य विभाग ने स्वास्थ्य के मामले पर कुछ बातों का उल्लेख करते हुए एक नोट जारी किया था। पिछले चार महीनों पर नज़र डालें, तो क्या आपने किसी विशेष लेख या विशेष घटनाओं या रुझान पर कुछ लिखा है?

जब आप अतीत में देखते हैं, तो कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे सब कुछ शुरू से ही इतना स्पष्ट था। लेकिन ऐसा था नहीं। एक क्षण जो मुझे विशेष रूप से याद है, डब्ल्यूएचओ का एक संयुक्त मिशन था जिसमें दुनिया भर के वैज्ञानिक चीन गए थे। मुझे याद है कि मैं उस दिन ब्राजील जा रहा था और मैं साओ पाउलो में हवाई अड्डे पर उतरा था। मुझे डब्ल्यूएचओ से ईमेल मिला कि रिपोर्ट जारी हो गई है।

मैंने इसे साओ पाउलो के रास्ते में कार में पढ़ना शुरू कर दिया। यह पुरानी बातों को याद करने जैसा था, यह एक अहम क्षण था, क्योंकि यह रिपोर्ट वास्तव में उस समय आई थी जब किसी को यह पता नहीं था कि वास्तव में चीन में क्या हो रहा था। उस रिपोर्ट में कहा गया था कि चीन इस पर नियंत्रण करने में कामयाब रहा है और इसमें बताया गया था कि उन्होंने यह कैसे किया। इसने अगले कुछ महीनों की रूपरेखा निर्धारित कर दी। जो कुछ भी हम अब देख रहे हैं, शटडाउन, लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, या

जो कुछ भी आप इसे कहना चाहें, वह पहले से निर्धारित नहीं था। मेरा मतलब है, मैंने उस रिपोर्ट के कई लेखकों से बात की थी और उन्होंने मुझे बताया कि जब वे चीन गए थे, तो उन्होंने सोचा था कि चीन लोगों को लॉकडाउन करके सांस की बीमारी को नियंत्रित नहीं कर सकता, यह कोई उपाय नहीं है। यह कारगर नहीं होगा। लेकिन जब वे वहां पहुंचे, तब उन्होंने महसूस किया कि यह कारगर था।

ये सभी बातें इस महामारी के मुख्य पहलू बन गए। उस रिपोर्ट को पढ़ने के बाद मुझे ये बातें समझ में आईं। यह दिलचस्प था, क्योंकि जब रिपोर्ट सामने आई, तो मैं अपने संपादक और अपने सहयोगियों से बात कर रहा था और मैं कह रहा था कि यह रिपोर्ट अगले सप्ताह की बड़ी खबर बनने वाली है। यह सभी बहस का मुद्दा होने वाली है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह मुद्दा ऐसी बहस में फंस गया और सबसे बड़ी बात यह है कि इसे बहुत से लोगों ने कवर नहीं किया। मेरा मतलब है, ब्रूस आयलवर्ड, जिन्होंने संयुक्त आयोग का नेतृत्व किया था, ने बाद में बहुत सारे साक्षात्कार दिए जो बहुत साधरण थे। द न्यूयॉर्क टाइम्स में एक साक्षात्कार छपा था। एक साक्षात्कार वोक में प्रकाशित हुआ था। इन साक्षात्कारों ने धीरे-धीरे लोगों की धारणा बदल दी। लेकिन मेरे लिए यह महत्वपूर्ण था कि आखिर यह महामारी कैसे विकसित हुई।

कुछ अन्य बातें भी हैं। मेरा मतलब है, यदि आप अमेरिका को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि सिएटल में हुए मामलों के बारे में कुछ पहलू हैं, जब यह स्पष्ट हो गया कि कुछेक मामले थे, पहले दो मामले हुए जब हमारे पास जीनोम थे, ऐसा लगता था कि वे एक दूसरे से जुड़े हुए थे, हालांकि उनमें एक महीने का फासला था। मेरा मतलब है समय के लिहाज से। फिर यह स्पष्ट हो गया कि अमेरिका में पहले से ही महामारी फैल रही थी। इसने मेरी धारणा बदल दी, जिसने पूरी बहस को ही बदल दिया कि अमेरिका में क्या चल रहा था, और मुझे लगता है कि आप ऐसे कई पलों की पहचान कर सकते हैं। हम आज भी उन पलों को जी रहे हैं। कभी-कभी यह बहुत कठिन होता है खासकर जब आप इसे बहुत बाद में पहचानते हैं।

यह मेरे लिए बड़ी हैरानी की बात है कि इन चार महीनों में हमने जिन चीजों के बारे में सोचा था वे नज़रिया पूरी तरह से बदल गया। मेरे विचार से एक पत्रकार होने के नाते इस महामारी के बारे में लोगों से यह कहा जाए कि अब इसके बारे में वैज्ञानिक क्या सोचते हैं और फिर उन्हें बहुत अधिक नहीं समझाया जाता। लेकिन फिर नए सबूत मिलते हैं कि सबूत बदल रहा है। पत्रकारों के लिए इसे बताना काफी मुश्किल होता है। मुझे लगता है कि यह दर्शकों के लिए भी कठिन है।

मुझे इसकी तेज गति भी हैरान करती है। मेरा मतलब है, जैसा विज्ञान ने बताया है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे ऐसी कहानी लिखने की आदत हो गई है जो कहती है, सुनो, हमने दो साल पहले इस वायरस के बारे में जो सोचा था, वह सही नहीं है। लेकिन अब आप उसी कहानी को एक हफ्ते बाद लिख रहे हैं।

हमने एक हफ्ते पहले जो कहा था। हाँ। इसलिए यदि हम कुछ हफ्ते या कुछ महीनों से कुछ साल तक को देखें तो आपने 2014 की इबोला महामारी को भी कवर किया था। मैं आज की स्थिति और पिछली महामारी की स्थिति के बारे में जानने को उत्सुक हूँ। आप उस महामारी के बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप इस महामारी की तुलना कर सकते हैं? क्या आपने इसकी कवरेज से कोई सबक सीखा है, जिससे यह पता चल सके कि आप अभी क्या कर रहे हैं?

मेरा मतलब है, उस विशेष अनुभव से। लाइबेरिया में इबोला, जो मेरे विचार में जीवन को सिरे से बदलने जैसा है। मैं जिस तरह से बहुत सी चीजों के बारे में सोचता था, इसने उसे पूरी तरह से बदल दिया। यह अभी भी मुझे बहुत प्रभावित करता है। जब मैं इसके बारे में बात करता हूं।

मेरा मतलब है, मेरे लिए पहली चीज यह थी कि मैंने विज्ञान विषय पढ़ा है। मैं वायरस को अणु के स्तर पर देख सकता हूं। यह मेरे दिमाग में एक खांचे की तरह है। इसलिए मुझे बहुत स्पष्ट रूप से याद है जब पश्चिम अफ्रीका में इबोला का प्रकोप नियंत्रण से बाहर हो रहा था। मैं इन सभी वैज्ञानिकों से बात कर रहा था और सोच रहा था कि क्या यह बदल रहा है? क्या वायरस बदल गया है? आखिर चल क्या रहा है? यह हैरान करने वाला है। मुझे वास्तव में यह महसूस करने में थोड़ा वक्त लगा कि वायरस नहीं बदला था। समाज बदल गया था या यह उस समाज को प्रभावित कर रहा था जो पहले प्रभावित हो चुके समाज से अलग काम कर रहा था। यह एक खानाबदोश समाज था। इनमें बहुत सा संवाद होता था, गृह युद्ध के अपने अनुभवों के कारण इसकी सरकार पर आस्था नहीं थी। लगातार दो गृह युद्ध हो चुके थे।

केवल मैं ही नहीं बल्कि उस समय मैंने जिन बहुत से वैज्ञानिकों से बात की उनका यह अनुभव था कि संक्रामक रोग तभी पैदा होता है जब रोगजनक और समाज आपस में मिलते हैं। ऐसा ही कुछ हुआ था। लेकिन इसने मुझे वापस घर भेज दिया, इससे कितना फर्क पड़ा। वर्षों से मैंने इसे बार-बार देखा है, और

इसने मेरे इस नज़रिए को बदल दिया कि मैं संक्रामक रोगों को कैसे देखता हूं। तो यह पहली चीजों में से एक थी। और निश्चित रूप से, हम आज जो महामारी देख रहे हैं, वह अपना प्रभाव दिखा रही है। एक ही वायरस मूल रूप से विभिन्न स्थानों, विभिन्न समाजों, बहुत से लोगों को प्रभावित कर सकता है और लोग इससे अलग-अलग ढंग से निपट रहे हैं। इसलिए यह ढांचा वास्तव में मुझे यह देखने में मदद करता है कि इस समय दुनिया में विभिन्न स्थानों पर क्या हो रहा है। मुझे लगता है यह एक बात है। महामारी पर दूसरी बात मैंने ट्विटर पर काफी पहले व्यंग्य के रूप में लिख दी थी कि लगता है महामारी का वायरस हर जगह है। इसलिए शुरुआत में, हर कोई चीन को देख रहा था। उद्देश्य यह था कि वायरस को चीन में ही नियंत्रित कर दिया जाए। आप ऐसा कैसे करेंगे? क्या यह संभव होगा? फिर यह अन्य स्थानों पर फैल गया। क्या यह उन स्थानों पर नियंत्रित किया जा सकता है? बेशक, एक बार वायरस हर जगह पहुंच जाए, तो यह वैश्विक हो जाता है, तो यह बात बहुत आम हो जाती है। क्योंकि तब बात सीमाओं को बंद करने या वायरस को कहीं जाने से रोकने की नहीं रह जाती। अब यह इस पर निर्भर करता है कि आपका समुदाय इस पर किस तरह से प्रतिक्रिया करता है। मैंने इबोला के प्रकोप के दौरान लाइबेरिया में देखा, जहां सरकार बहुत मजबूत नहीं थी और इस बात को लेकर बहुत अविश्वास था कि वायरस को कैसे हराया जा सकता था। स्थानीय समुदाय इसे सच मानते हुए कुछ उपाय अपना रहे थे।

यह शायद तीसरी बात है। शायद आखिरी, मैं इबोला के प्रकोप के दौरान यूरोप वापस आ गया। बहुत से लोग मुझे बता रहे थे, कि पश्चिम अफ्रीका के लोगों में गुस्सा था, वे कह रहे थे। यीशु, क्या वे अपना व्यवहार बदल सकते हैं? उनके साथ क्या गलत है? ये जो वायरस के बारे में बात कर रहे हैं वह सही नहीं है। लोगों को एहसास नहीं था कि व्यवहार को बदलना कितना कठिन था। गलत सूचना और ऐसी तमाम बातें कितनी आसानी से फैलती हैं।

अब यह मेरे लिए विडंबना है। लाइबेरिया में इबोला पर एक बड़ी बहस अंतिम संस्कार की प्रथाएं थीं क्योंकि इन अंत्येष्टियों से वास्तव में वायरस फैल रहा था। लोग मुझे कह रहे थे कि उनके पास अंतिम संस्कार के लिए अलग-अलग स्थान क्यों नहीं हैं? उनके यहां श्मशान घाट क्यों नहीं हैं? उनके यहां इतनी विशाल अंत्येष्टि क्यों होती है जहां वे अपने प्रियजनों को अलविदा चुंबन देते हैं, जो एक बहुत बड़ी प्रथा है। यह प्रथा लोगों के लिए बहुत अहमियत रखती है। यह एक परंपरा है जो लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ साल बाद, हम जर्मनी में थे और सरकार आपसे यह कह रही थी कि आपको इस वायरस के कारण अपने मित्रों के साथ थोड़ी देर के लिए भी बाहर नहीं जाना चाहिए। लोगों को यह करना भी मुश्किल लगता है। यह वास्तव में दर्पण को पकड़ने जैसा है। मैं यह भी सोचता हूं कि जब हम

पत्रकारों के रूप में कुछ जगहों पर संक्रामक रोगों के बारे में रिपोर्ट करते हैं तो हम ऐसी ही पूर्वधारणाओं से बंधे होते हैं।

यह एकदम सही है, क्योंकि वास्तव में आपसे यही पूछना चाहती थी, जैसा कि आपने कहा था कि रोग तब होता है जब कोई रोगजनक किसी समाज से मिलता है। यहाँ हमारे पास दुनिया भर के समाजों के उदाहरण हैं जो नोवल कोरोनवायरस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। आप बर्लिन में रहते हैं। जर्मनी ने इस महामारी को नियंत्रित करने का एक अद्भुत काम किया है। मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में हूँ। हमारी प्रतिक्रिया थोड़ी अलग रही है। यह केवल अलग नहीं है, बल्कि चैंकाने वाली है, मुझे लगता है, मेरे सहित बहुत सारे लोग, जो उम्मीद कर रहे थे कि अमेरिकी अधिक नेतृत्व प्रदान करेंगे, सीडीसी अधिक प्रमुख होगा, वे सभी इसमें कहीं शामिल नहीं थे। जर्मनी में स्टेनिमीयर और मर्केल के साथ रहने वाले किसी व्यक्ति की स्थिति ऐसे नेताओं के कारण अच्छी थी। क्या आपके पास उन तरीकों के बारे में कोई विचार है जो पश्चिमी औद्योगिक समाज इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं?

हाँ, मेरा मतलब है, मेरे लिए, मैं आंशिक रूप से लंदन में पला-बढ़ा हूं। इसलिए मैं भी अक्सर ब्रिटेन की स्थिति को देखता हूं और मैं वहां की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हूं। चूंकि मैं विज्ञान के क्षेत्र में काम करता हूं, मैं अमेरिकी स्थिति का पालन करता हूं। बेशक इन दोनों देशों को देखना निराशाजनक है। मेरा मतलब है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मेरे कहने का मतलब है कि हम कोरोना वायरस के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जिस तरह हम मॉडलिंग और महामारी विज्ञान के बारे में जानते हैं। जिन लोगों ने यह काम किया है, वे उन दो देशों में रहते हैं। उनमें से बहुत से लोग। दुनिया में इन दोनों देशों में रहने वाले कुछ सबसे अच्छे दिमाग हैं जहां वास्तव में अच्छा नहीं हुआ है।

मुझे लगता है कि मैं लोकलुभावन की राजनीति का विशेषज्ञ नहीं हूं। मैंने वर्षों से रिपोर्टिंग से यह बात जानी है कि विश्वास बहुत महत्वपूर्ण होता है, यानी सरकार पर भरोसा करना, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे पास एक वायरस है और हमारे पास वैक्सीन भी नहीं है। हमारे पास दवा भी नहीं है। हमारे पास वे सभी हैं जिसे वैज्ञानिक गैर-फार्मास्युटिकल हस्तक्षेप एनपीआई कहते हैं और ये एनपीआई किसी ओर पर भरोसा करते हैं, जो लोगों को व्यवहार बदलने के लिए कहे और आबादी उनकी सलाह को मानती है, इसका पालन करती है क्योंकि वह जानती है कि जो लोग सलाह दे रहे हैं वे जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। इसलिए मुझे लगता है कि मीडिया ने जिस तरह से अमेरिका और ब्रिटेन दोनों में भूमिका निभाई है, और जिस तरह से लोकप्रियता ने इस विचार को अपनाया है कि आप वास्तव में सत्ता

में बैठे लोगों पर भरोसा नहीं कर सकते हैं। ये चीजें वास्तव में मिट गई हैं। यह वह मूल बात है, जिसकी आपको जन स्वास्थ्य में आवश्यकता है जो विश्वास है। यह एक जलाशय की तरह है। जब यह न हो, यदि आपके पास कोई दवा नहीं है, तो आप ज्यादा नहीं चल सकते। यह देखकर वाकई दुख हुआ है। आप कुलीन वर्ग पर विश्वास खो देते हैं। मेरा मतलब है, यह दिलचस्प है कि हम इस महामारी के उस दौर में हैं जहां बहुत से लोगों ने यह तर्क दिया है कि आपको विशेषज्ञों पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

ये सभी बातें ब्रिटेन में ब्रेक्सिट की बहस में हो रही थीं कि जनता को बहुत से विशेषज्ञ मिल चुके हैं। जब देखो इनमें से कोई न कोई आकर अपनी सलाह देता रहता है। विशेषज्ञों के लिए अपनी सलाह लोगों को, यहां तक कि राजनेताओं को भी देना बहुत कठिन है। मुझे लगता है कि यह एक बहुत बड़ी समस्या है। लेकिन जर्मनी में, निश्चित रूप से हालात कुछ अलग थे। वहां की चांसलर एक पूर्व वैज्ञानिक हैं। उसने बहुत अच्छा काम किया है। मेरा मतलब है, वह जानती हैं कि विज्ञान मूल रूप से कैसे काम करता है। उदाहरण के लिए, वह यह बात बता सकती है, जैसा कि हमने पहले कहा था, कि वायरस का आकलन वैज्ञानिक आधार पर किया जा रहा है और यह किस तरह कार्य कर रहा है, और शोध के आधार पर हर हफ्ते अनुमान बदल सकता है। यदि लोगों में आप लोकप्रिय हैं तो ऐसा करना आपके लिए बहुत आसान है, इसका इस्तेमाल एक पन्नी की तरह करें और एक के बाद एक अपनी बात कहते रहें। यदि आपको जिम्मेदारी निभानी है तो आप यह बात जनता को समझा सकते हैं। आप लोगों को सबसे अच्छी वर्तमान सलाह का पालन करने के लिए कह सकते हैं। हमारे पास यही जानकारी है। मेरा मतलब है, हमने कुछ महीनों में इस वायरस के बारे में इतना ही जाना है।

या एक सदी, एक औद्योगिक सदी की तरह लगता है।

इसलिए मैं इस सवाल पर संवाद के लिहाज से बात करना चाहती हूं, क्योंकि जब मैं इस बातचीत के लिए तैयार हो रही थी तो मुझे ख्याल आया कि आप कितना अधिक काम कर रहे हैं। मेरा मतलब है, आप न केवल नियमित रूप से विज्ञान के बारे में लिख रहे हैं, बल्कि आप ट्विटर पर भी बहुत सक्रिय हैं और अक्सर आप डब्ल्यूएचओ के प्रेस कान्फ्रेंस को लाइव ट्वीट भी करते हैं। और अलग-अलग चैनलों पर बहुत काम हो रहा है। लेकिन मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि क्या आप यह बता सकते हैं कि आप किस तरह से संतुलन बनाते हैं और यह भी कि आपकी पत्रकारिता में ट्विटर की क्या भूमिका है।

हां। सबसे पहले मैं आपको यह बता दूं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि ट्विटर मेरे लिए वास्तव में दिलचस्प है और कुछ साल पहले तक मैंने ट्विटर का वास्तव में उपयोग नहीं किया था। मैं एक रिपोर्टिंग दौरे पर था और मेरे एक सहकर्मी ने मुझे कहा कि उसे ट्विटर बहुत पसंद है और उसने मुझे बताया कि वह इसका उपयोग कैसे कर रही है। मैं बहुत उलझन में था, लेकिन मैंने इसका उपयोग करना शुरू कर दिया। और इन वर्षों में, मेरे लिए इसका महत्व बहुत बढ़ गया है। इस पर बहुत से वैज्ञानिक मौजूद होते हैं।

शुरुआत में, शायद एक वर्ष में एक या दो कहानियां थीं जो मैंने देखीं, जहां मैंने किसी को कुछ नए शोध को ट्वीट करते देखा और उससे जो बात सामने आई उसने मुझमें दिलचस्पी पैदा हुई। इस महामारी में, ट्विटर वास्तव में एक ऐसा मंच बन गया है जहां हम एक निश्चित सीमा तक वैज्ञानिक बन जाते हैं। साथ ही, इस पर नीति-निर्माता और पत्रकार बातचीत कर रहे हैं और हमें बहुत से शोध की प्रकाशन से पूर्व जानकारी मिल जाती है।

सामान्य तौर पर कहें तो वास्तव में बहुत सा विज्ञान इस पर काम कर रहा है, आपको विज्ञान या प्रकृति या किसी पत्रिका से एक ईमेल मिलता है जो आपको बताता है कि अगले सप्ताह क्या प्रकाशित होने वाला है। प्रकाशन से पहले आप यह सब नहीं जान सकते। तो आपको यह भी कैसे पता चलेगा कि ऑनलाइन कुछ नया छपा है जो दिलचस्प है? कई बार लेखक खुद ट्वीट कर रहा होता है, और हमारे सामने एक नया पेपर होता है और फिर दूसरे लोग भी इसमें शामिल हो जाते हैं, और बताते हैं कि उन्हें क्या दिलचस्प लगा है। इसलिए आपको पहले से ही एक तरह की लाइव समूहिक समीक्षा मिल जाती है। आपको दोनों चीजें मिल जाती हैं एक तो सामग्री जो दिलचस्प हो सकती है और दूसरे कुछ रोचक पहलू, जिन पर आप लोगों से टिप्पणी करने के लिए कह सकते हैं। यह अविश्वसनीय रूप से मददगार होता है।

मैंने इस विषय पर ट्विटर पर बहुत समय बिताया है। इसी के चलते मैं इस पर काफी समय बिता रहा था और मुझे लगा कि मुझे भी एक तरह से योगदान देना चाहिए। और फिर हमारे सामने ऐसी स्थिति आती है जहाँ कुछ गलत सूचना मिलती है। इसलिए मैंने महसूस किया कि यदि मैं डब्ल्यूएचओ की प्रेस कान्फ्रेंस सुनने जा रहा हूं और मुझे इसे लिखना होगा, तो मैं इसे छोटे-छोटे अंशों में देने का प्रयास करूं और यह मेरे लिए ठीक होगा। मेरा मतलब है, यह मेरे अपने रिकार्ड के लिए है। जैसे कभी-कभी मैं अपने ट्विटर के इतिहास में कुछ चीजें खोजने के लिए वापस चला जाता हूं क्योंकि मुझे याद है कि किसी ने प्रेस कान्फ्रेंस में ऐसा कुछ कहा था। इसलिए मैं उसका अपने लिए इस्तेमाल करता हूं। साथ ही, मैं इसे

एक स्रोत के रूप में रखता हूं, मेरा मतलब है, यह ऐसी सामग्री है जिस पर आप डब्ल्यूएचओ के बारे में बहस कर सकते हैं, लेकिन यह एक विश्वसनीय स्रोत है और वे जो कहते हैं वह महत्वपूर्ण है।

तो यह इस तरह से शुरू हुआ। फिर इसमें बहुत समय लगा। मेरा मतलब है, फिलहाल, चूंकि कोविड-19 ही सब कुछ है जो मैं कर रहा हूं, यह मेरे लिए कारगर है। मेरा मतलब है, यह मूल रूप से मेरी रिपोर्टिंग है। मुझे इन प्रेस सम्मेलनों को वैसे भी सुनना पड़ता है। इसलिए मैं इनके साथ-साथ ट्विटर भी करता हूं। जब मैं किसी कहानी की रिपोर्टिंग कर लेता हूं और आपकी कहानी छप जाती है। इसके बाद भी यह आपको कुछ पृष्ठभूमि और कभी-कभी बस थोड़ी सी जानकारी देता है। एक पत्रकार के रूप में यह आपको इस तरह के विचार से थोड़ा हटने के लिए भी कहता है। यह भी संवाद करने का एक अच्छा तरीका है। ट्विटर पर मैं इसे कुछ अलग ढंग से कर सकता हूं। थोड़ी सी टिप्पणी करके, कुछ तुलना करके या कहानी को कुछ अलग अंदाज में बयान करके, यह वास्तव में उपयोग करने का एक दिलचस्प माध्यम है। इसलिए शुरुआत में, जब मेरे पास थोड़ा और समय था, जैसे कि मुझे ऑनलाइन पूरी कहानी पढ़ना और उस पर एक अच्छा ट्विटर करना पसंद था। इससे आपको ऐसे लोग मिल जाएंगे जिन्होंने पूरी कहानी नहीं पढ़ी होगी, लेकिन कम से कम वे उस ट्विटर को पढ़ पाएंगे। इसलिए जब मैं पत्रकारिता सिखाता हूं, तो मैं सभी को विज्ञान मंचों से जुड़ने, ट्विटर को देखने और थोड़ा-बहुत समझाने की कोशिश करता हूं कि वे इसे अपने लिए कैसे उपयोगी बना सकते हैं।

हो सकता है, यह सभी के लिए कारगर न हो, लेकिन निश्चित रूप से यह मेरे लिए बेहद मददगार है।

मुझे लगता है कि यह अपने लिए ऑनलाइन नोट लेने की एक बेहतरीन सलाह है जिसे आप एक साथ अन्य लोगों के साथ एक उपहार के रूप में साझा कर रहे हैं क्योंकि यह वास्तव में शानदार तरीका है। तो आखिरी सवाल, जैसा कि आपने अभी कहा, कोविड-19 एक कहानी है और हम नहीं जानते कि यह कहानी कब तक हम सबके लिए या आपके लिए बनी रहेगी। आपको क्या लगता है कि अगली कहानियाँ इसके बाद से सबसे महत्वपूर्ण कहानियाँ होंगी? हम किसी बड़े अंत की ओर जा रहे हैं। आपातकाल की शुरुआत के खत्म होने पर यह एक अनिश्चित अवधि के लिए न्यू नार्मल के साथ रहना है, आपको क्या लगता है कि आप और क्या कवर करेंगे या आप क्या अपेक्षा करते हैं?

मुझे लगता है कि इसका कई तरह से जवाब दिया जा सकता है। मेरा मतलब है कि आपने अपने काम में भी देखा होगा कि कई बार कोई कहानी काफी बड़ी होती है और मुझे लगता है कि यह कोविड-19 की तुलना में बड़ी नहीं होगी।

आपके पास अन्य दृष्टिकोण भी हैं और अन्य पत्रकार इसके हिस्से को कवर करने में शामिल हो रहे हैं। तो जाहिर है कि हम भविष्य में आर्थिक गिरावट और इसके भू राजनीति पहलुओं पर चर्चा करेंगे। मुझे लगता है कि हमने अमेरिकी सरकार के बारे में जो देखा है, वह अपने नागरिकों को इस सबसे बचाने में सक्षम या इच्छुक नहीं है। आपको हैरानी होगी कि दुनिया को समझने को लेकर इसका क्या मतलब है।

ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं, जिनकी पृष्ठभूमि इस बात को लेकर मेरे से बेहतर हो सकती है। और मैं वास्तव में इन चीजों पर उनके विचारों को जानने के लिए उत्सुक हूं। एक विज्ञान पत्रकार के रूप में, मुझे लगता है कि यह एक तरह की कहानी ही है जो वास्तविक विज्ञान के उस पहलू को बताएगी, जिसमें लोगों की विज्ञान के कुछ हिस्सों को लेकर कम दिलचस्पी होगी।

लेकिन निश्चित रूप से, बहुत ही आकर्षक काम अब शुरू हुआ है। तो अब हम पीछे मुड़कर देखेंगे। मेरा मतलब है, हम अभी भी इसके मूल स्रोत के बारे में बात कर रहे हैं। यह महत्वपूर्ण होने जा रहा है। हमें देखना होगा कि हमने इन सभी उपायों से क्या सीखा है जिन्हें बेतरतीब ढंग से अपनाया गया था क्योंकि किसी के पास भी कोई बेहतर विचार नहीं था, जैसे कि यह कोई अनावश्यक प्रतिक्रिया थी? क्या चीज कारगर रही? और किस संदर्भ में? मुझे लगता है कि कुछ देशों के बारे में अभी भी यह एक बड़ा सवाल है जिनके बारे में यह प्रतीत होता है कि उन्होंने बिना कोई स्पष्टीकरण दिए अच्छा काम किया है।

इसलिए मुझे लगता है कि हमें यह देखने के लिए कुछ हफ्ते और इंतजार करना होगा कि क्या वायरस उन जगहों पर भी फैल जाएगा या अभी भी कुछ ऐसे कारक हैं जो हमें अभी तक समझ में नहीं आए हैं फिर भी वे हमारी मदद करते हैं। मौसम एक बहुत बड़ा मुद्दा होगा। क्या उसमें यह कम हो जाएगा? फिर हमें इस पूरी धारणा के बारे में बहुत कुछ पढ़ने को मिलेगा कि क्या दूसरी लहर आने वाली है? यह किस तरह की होगी, इसका स्वरूप क्या होगा? हमें उसके लिए कैसी तैयारी करनी चाहिए?

और फिर, इसके संदर्भ में अतीत में और फिर भविष्य में देखा जाएगा। और फिर नई कहानियां जन्म लेंगी जिनके बारे में हम कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकते। इन सभी दवाओं के परीक्षण चल रहे हैं। इनमें से कुछ कारगर हो सकती हैं, और यह एक बड़ी अहम बात होगी। हम नहीं जानते कि यह वैक्सिन क्या है, क्योंकि वैक्सीन की दौड़ में कई उम्मीदवार हैं। वैक्सीन के साथ समस्या हो सकती है। मुझे लगता है कि यदि चिकित्सा और टीके दोनों कारगर होते हैं तो सबसे बड़ी समस्या इसका समान वितरण होगी। मेरा मतलब है, विशेष रूप से इस तरह के वैश्विक माहौल में जहां बहुत अधिक राष्ट्रवाद है, यही मेरे लिए एक बड़ी चिंता है। यदि हमारे पास ऐसा कुछ है जिसे पूरी दुनिया में समान रूप से वितरित किया जाना है तो हम यह कैसे सुनिश्चित करेंगे? इस तरह की बहस निश्चित रूप से चलती रहेंगी। और फिर दूसरी चीजें भी हैं, जैसे कि वायरस अपना रूप बदल सकता है। हम अभी नहीं जानते। हम यह पता लगा सकते हैं कि इसके कुछ दीर्घकालिक प्रभाव होंगे। मेरा मतलब है, हम जानते हैं कि ऐसा बहुत से वायरस में होता है।

मेरे लिए यह बेहद दिलचस्प है, लेकिन तभी जब कोई यह जवाब दे सके कि हमें ऐसे लोग मिले हैं जिन्हें यह वायरस एक या दो साल पहले हुआ था।

ऐसी ही कुछ बातें। एक विज्ञान पत्रकार होने के नाते विज्ञान के बारे में मुझे एक चीज़ बेहद आकर्षक लगती है वह यह कि आप वास्तव में यह नहीं कह सकते हैं कि आप एक साल में किस कहानी पर काम करने जा रहे हैं। मेरा मतलब है, पत्रकारिता के कई अन्य क्षेत्र भी हैं जिन पर मूल रूप से बहस होती रहती है। मेरा मतलब है कि मैं आज जो कुछ लिख रहा हूं वह अधिकांश सामग्री पांच साल पहले या दस साल पहले मौजूद नहीं थीं, और इसलिए नई चीजें आ सकती हैं। ऐसा भी हो सकता है कि अभी हम अपने सही रडार पर ही न आए हों। यह दूसरी बात है। एक विज्ञान पत्रकार के रूप में यह आपको सिखाता है कि दिमाग को हमेशा खुला रखें क्योंकि आप बहुत कुछ नहीं छोड़ सकते। आपको यह देखना होगा कि क्या आ रहा है और क्या दिलचस्प है।

मुझे लगता है कि दूसरी अहम बात गलत जानकारी हो सकती है। मुझे लगता है कि मेरे जैसे बहुत से विज्ञान पत्रकार जब रूपक विषयों पर थोड़ा अधिक समय देते हैं, तो हमें वास्तव में इस पर विचार करना चाहिए। जिस तरह से इस महामारी में विज्ञान संबंधी सूचना देने में बदलाव आया है, कैसे कुछ लोगों ने इसका दोहन किया है और यह कैसे भावी विज्ञान में बदलाव लाएगा। मैं ईमानदारी से सोचता हूं कि यह केवल विज्ञान नहीं बल्कि विषाणु विज्ञान या प्रकोप से जुड़ा विज्ञान है। मुझे लगता है कि इस महामारी

के बाद से विज्ञान कुछ अलग ढंग से दिखने वाला है। और यह विज्ञान पत्रकार के लिए एक बहुत बड़ी कहानी है।

इसलिए मैं वास्तव में स्तब्ध रह जाती हूं कि विज्ञान पत्रकार होने के नाते, हम अक्सर यह नहीं जानते कि वह अगली चीज क्या है जिसे हम कवर करने जा रहे हैं। और इस न्यू नार्मल के बारे में सबसे अजीब चीज यह है कि हम सभी जानते हैं कि हम आने वाले समय में कोविड-19 के बारे में लिखने जा रहे हैं, जो भी हमने पहले लिखा था। यही हमारी अच्छी बात है। इसलिए धन्यवाद। उन टिप्पणियों के लिए धन्यवाद। और हमारे पाठ्यक्रम में शामिल होने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

मुझे बुलाने के लिए शुक्रिया मेरीन।